।। श्री बड़माताय नमः ।।

लोढा की कुलदेवी भडाणा

श्री बड़माताजी महाराज

सिलोको, स्तुति, आरती व नियम

पूज्य स्व. श्रीमती ऊर्मीला लोढ़ा

पूज्य स्व. श्री सम्पतराज लोढ़ा

पूज्य स्व. श्रीमति उगम कुंवर लोढ़ा

देवी से अनुरोध

रिद्धि दे, सिद्धि दे, अष्ट नव निधि दे ।

जगत में वृद्धि दे वाक्य वाणी

हृदय में ज्ञान दे, चित्त में ध्यान दे

मोय को वरदान दे सम्भवराणी ।

दुःख को दूर कर, काल चक्र चूर कर,

सुख भरपूर कर, राजराणी ।

गुणन की रीत दे, सेण से प्रीत दे

जगत में जीत दे, सदा जय भवानी ।

श्री बड़माताजी के स्थान की स्थापना

१. नये मकान या प्रतिष्ठान में अगर श्री बड़वासन देवी के स्थान की स्थापना करनी हो तो यह सिर्फ आसोज सुद एकम एवं चैत्र सुद एकम को ही अच्छे दुघडिये में ही होती है ।

२. श्री बड़माताजी की फोटो के साथ दीवार पर माली पन्ना, कुमकुम या केसर का स्वास्तिक, त्रिशूल और चांद सूरज बनाना, तीन या पांच पत्ते की एक वट की डाली धोकर उस स्थान के कोने में रखना, लोटे में साबुत मुंग, चावल, सात साबुत बादाम और सवा रुपया रखकर ऊपर साबुत श्रीफल रखना, लाल वस्त्र से ढ़क कर मौली से बांधकर केसर, कुम कुम से पूजा करना ।

३. दीप-धूप करके लापसी, प्रसाद, श्रीफल चढ़ाना ।

४. माताजी की स्तुति करना ।

५. फिर सदैव प्रातः और संध्या दीप-धूप करना ।

।। श्री बडमाताजी महाराज सहाय छै ।।

श्री बडमाता जी महाराज रो सिलोको

श्री सरस्वते माता लागुं जी पायो ।
सुध बुध दीजो किरपा कर मोयो ।। १।।

बे कर जोडी ने करुं अरदासो ।
निर्मल बुद्धि सुं आखर परकासो ।।२।।

श्री बडवासन देवी रो केसूं सिलोका ।
एकण चित करने सांभल जो लोको ।।३।।

नगरे भढाणे मोटे मंडाणें ।
राजा लाखनसी खांपे चौहान ।।४।।

श्री बडवासन देवी रो बड नीचे थाने ।
राजा ने परजा सहु जन ही माने ।।५।।

राजा लाखनसी रे पुत्र नहीं कोई ।
जिणरी तो चिन्ता इदकी नित होई ।।६।।

बडा वेदक ने जोतेसी भारी ।
बहु द्रव्य खर्च्या लागी नहीं कारी ।।७।।

सम्वत् बरसे सातो सै एके ।
श्री बडमाताजी राखे राजा रो टेके ।।८।।

पण्डित क्रामाती विद्या भरपूरे ।
वैसे भट्टारक रविप्रभ सूरे ।।९।।

एक दिन राजा गुरु पास आयो ।
हाथे जोडी ने शीश नवायो ।।१०।।

राजा लाखनसी ने प्रतिबोध दीनो ।
धर्म सुनाय श्रावक कीनो ।।११।।

राजा लाखनसी रे पुत्र री चाह ।
जिन कारण गुरुजी कीनो उपाय ।।१२।।

देवी रो परचो गुरा ने आयो ।
मंदिर माये सुं पारस उठायो ।।१३।।

देवी रे नाम सुं कनको मंडायो ।
राणी रे गले मादल्यो बंधायो ।।१४।।

उप दिन सुं राणी रे गर्भज आशा ।
राजा ने परजा हुआ हुलासा ।।१५।।

सवा नौ मासे शुभ विरियां माई ।
सुख सूं महारानी पुत्रज जाई ।।१६।।

राजा ने परजा हरखे नर-नारी ।
घर-घर गावे मंगलाचारी ।।१७।।

दशोटन करने गुरु पासे आवे ।
नाम गौत्र गुरुजी थपावे ।।१८।।

राजा ने प्रजा सबे नर-नारी ।
महाराजा किनी भारी असवारी ।।१९।।

बाजे नौबत ने धूरे निशानो ।
चढ़िया महाराजा मोटे मंडाणो ।।२०।।

गाजा ने बाजा ढ़ोल-ढ़माको ।
देवी रे पावे आवे सब सामों ।।२१।।

हाथी ने घोडा पालकियां पाला ।
कोतल सिणगारया चाले चिरताला ।।२२।।

गेणा ने कपडा सिरपाव भारी ।
कर-कर पोशाकां आया नर-नारी ।।२३।।

भक्तणियां नाचे, मंगल गावे ।
राजा रे मन में इदके उछावे ।।२४।।

मजलाजी मजला कलसे बंधावे ।
गुरु पासे मंदिर माताजी रे आवे ।।२५।।

कुंकुंम ने केसर चन्दन सूं चरचे ।
धूपे दीपे कर पूजापो अरचे ।।२६।।

नवे नेवद ने लापसी चढावे ।
मासमो करने नामे दिरावे ।।२७।।

नामे रामसी लोढ़ा रो गोतर ।
श्री बडवासन पूंजा होसी वधोतर ।।२८।।

मासमो, झडूलो, परण्यां री जाते ।
लोढ़ा री कुलदेवी श्री बडवासन माते ।।२९।।

इण विध सूं पहलां मासमो करनो ।
पीछे बालक माता ने बारे पग धरनो ।।३०।।

इण विध लोढ़ा में मर्यादा करसी ।
श्री बडवासन पूज्या बड ज्यूं विस्तरसी ।।३१।।

इण विध लोढ़ा में मर्यादा राखे ।
वधियो लोढ़ा कुल बड़जी में साखे ।।३२।।

कुलदेवी कीनी लोढ़ा पर किरपा ।
दिन-दिन बधिया इदके बधेपा ।।३३।।

इण विध माता परचो बहु दीना ।
सेवे जिका रा कारज सिद्ध कीना ।।३४।।

देवी रो परचो नगरे में भारी ।
राजा ने परजा पूजे नर-नारी ।।३६।।

जिण कारण ध्यावे सो ही फल पावे ।
बोलवा बोली ने सारे नित सेवे ।।३६।।

आयडजी लोढ़ा दिल्ली रे मांही ।
क्रोडी धज हुआ, पुत्रज नार्ही ।।३७।।

दिल्ली रो बादशाह माने विशेके ।
त्रिनारी परण्या पुत्र नही एके ।।३८।।

दूजा तो देवता सर्वे मनाया ।
औखद बेखद ने द्रव्य लगाया ।।३९।।

आयड रे मन में चिन्ता हुई भारी ।
बहु द्रव्य खरच्या लागी नहीं कारी ।।४०।।

अब तो बडमाता सूं कीनी स्तुते ।
नित सेवे पूजे मांगे एक पुते ।।४१।।

इण विध देवी री ध्यावना ध्याता ।
प्रसन्न हुई रुठी बड़माता रानि ।।४२।।

सेवक रे मन रा कारज सिद्ध कीना ।
एक पुत्र मांग्यो इग्यारह दीना ।।४३।।

सम्वत् बारे सौ बरसे बयाले ।
आयड़जी बोलवा पूरी तत्काले ।।४४।।

नगर भढाणे आयडजी आया ।
मासर्मो करने नामे दिराया ।।४५।।

आयड रा मन री पुरी जगीसे ।
सोना री मूरत सेरे पच्चीसे ।।४६।।

माता रे मन्दिर मूरत पदराई ।
पूजा रची ने शीश नवाई ।।४७।।

इण विध परचा किसड़ा बखाणू ।

देशे परदेशे यात्री नित आवे ।
जाते, झडूलो, मासमो करावे ।।४९।।

ध्यावे जिकां रा कारज सिद्व कीना ।
परचा पूरी ने दर्शन दीना ।।५०।।

आगे तो परचा इसड़ा तूं देती ।
अबे किण कारण बैठी नचीती ।।५१।।

पूजे ध्यावे पिण दर्शन ही आवे ।
म्हाने तो थारो परचो ही पावे ।।५२।।

चूक पडे तो गुनो बकसीजे ।
सेवक उपर किरपा अब कीजे ।।५३।।

दिन-दिन माता इदके तुम ध्याई ।
अब तो किरपा कर तुठो मों माई ।।५४।।

के तो सेवक ने दर्शन दीजे ।
के परचो पुरिया म्हाने परतीजे ।।५५।।

बालक रा मन री माताजी जाणो ।
दोरा सोरा री सर्वे पिछाणो ।।५६।।

म्हारा तो मन री थां सू नहीं छानी ।
माताजी कृपा कीजो कुल कानी ।।५७।।

जिण कारण ध्याउं सो ही फल पाउं ।
बोलवा बोली ने दर्शन ने आउं ।।५८।।

थांरी तो बोलवा थांरे ही सारे ।
किरपा थे किनी लागे नही वारे ।।५९।।

तूं ही जैमाता, तूं ही जगदाता ।
तो ने तो समरया उपजे सुख-साता ।।६०।।

ह्रदय - ह्रदय में तू ही बसन्ती ।
बोले चाले ने हुवे सब शक्ति ।।६१।।

देशे परदेश सेवक संभारी ।
दोरी विरिया में तूं ही रुखवारी ।।६२।।

दिन - दिन लोढ़ा में बधेपो कीजे ।
ज्युं थांरी महिमा इदंके बधीजे ।।६३।।

म्हारे केवण रो ओइज मुद्दो ।
कुलदेवी कीजो कुल रो जी उद्दो ।।६४।।

सम्वत् अठारे बरसे चौरासे ।
सुद पक्ष पंचेमी आसोज मासे ।।६५।।

मरुधर नगरे नागौर माई ।
लोढा दुलेमल सिलोको गाई ।।६६।।

भणें गुणें समझे धारे मन चिन्ते ।
कारज श्री बडवासन सिद्ध करन्ते ।।६७।।

।। इति श्री ।।

जय श्री बडमाताजी

स्तुति

रचयिता : भभूतमल लोढा, नागौर निवासी
(राग : जाओ जाओ ऐ प्यारी बेटी. रहो पति के संग)

सेवो सेवो देवी किरपाली, नगर भढ़ाणे वाली ।
सेवो सेवो देवी चमकाली, नगर भढ़ाणे वाली ।।टेर।।

नगर भढाणे भूप लखनसी, खांप चौहान कहीजे ।
रविप्रभ सुरीश्वर सेती, जैन धर्म धारीजे ।।१।।

विनय सहित गुरु वंदन करिने, दिलरो हाल सुणावे ।
पुत्र रतन मुझ चाह प्रबल है, दया करि बकसावें ।।२।।

ऐम सुनि गुरु ध्यान कियो है, सिद्धिवचन सुन पावे ।
कृपा करि वरदान दियो गुरु, लाखनसी हरषावे ।।३।।

सवा नौ माह पूरण थया तब, पुत्र बधाई आवे ।
राजा परजा हरष न मावे, घर-घर आनन्द छावे ।।४।।

कर असवारी आवे गुरु पे, विध-विध ठाठ सजावे ।
वाजे नौबत धुरे निशानां, मंगल गीत गवावें ।।५।।

सम्वत् सात सौ एक साल में, गौतर नाम थपावें ।
लाखनसी के पुत्र रामसी, लोढ़ा वंश कहलावे ।।६।।

श्री बडवासन देवी से मन्दिर, शहर भढाणें मांई ।
(श्री बडमाता देवी रो मन्दिर, शहर भढाणे माई)
लोढ़ा री कुलदेवी माता, गुरुदेव फरमाई ।।७।।

देश देश रा आवे यात्री, पुजा आन रचावे ।
(देश देश रा आवे यात्री चरणा शीश नवावे)
जात झडूलो करे दशोटन, बालक ने झूलावे ।।८।।

भांत -भांत री करे बोलवा, सब की आस पुरावे ।
(तरह तरह की करे बोलवा, सब की आस पुरावे)
समय समय पर सहायक होकर, चिन्ता दुर करावें ।।९।।

संकट काटन विध्न निवारण, रिद्वि-सिद्वकी दाता ।
(संकट काटन विध्न निवारण, सुख संपत की दाता)
जो जन सुमरन करत निरंतर, शुभ वांछित फल को पाता ।।१०।।

हाथ जोड कर करुं विनती, लोढ़ा वंश दिपावो ।
महर करि संतन प्रति पालन, आनन्द हर्ष बधाओ ।।११।।

सम्वत् द्वादश दोय सहस है, जोधाणो गुलजारी ।
लोढ़ा भभूतमल दास तिहारो, दया चावे छेः थारी ।।१२।।

सेवो सेवो देवी किरपाली, नगर भढाणे वाली ।
सेवो सेवो देवी चमकाली, नगर भढाणे वाली ।।१३।।

जय श्री बडमाताजी

आरती

सन्तन प्रतिपाली सदा कुशाली, जयकारी कल्याण करें।
मंगल की सेवा सुन मेरी देवा,
मैया हाथ जोड तेरे द्वार खडे
(मैया हाथ जोड तेरे द्वार खडे)

पान, सुपारी, ध्वजा नरेला,
ले झोला तेरे भेंट धरे
सुण जगदम्बे मत कर विलम्बे,
सन्तन का भण्डार भरे। ।।१।।
(मैया सन्तन का भण्डार भरे)

बुद्धिविधाता तू जगमाता,
मेरा कारज सिध्द करे।
चरण कमल का लिया आसरा,
शरण तुम्हारी आन पडे।
जहां जहां भीड पडे भक्तन पे,
त्यां त्यां आकर सहाय करें ।।२।।
(मैया सन्तन का भण्डार भरे)

गुरुवार ते सब जग मोयो,
तरुनि अनुप रुप घरे ।
माता होय कर पुत्र खिलावे,

कहां भारजा भोग घरे ।
तेरी महिमा कब तक वरुणू,
बैठी राजस आप करे ।।३।।
(मैया सन्तन का भण्डार भरे)

शुकर सुखदाई सदा सहाई,
सन्त खडे जै जै कार करे ।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश शेष फुन,
लिया वेद तेरे द्वार खडे ।
अटल सिंहासन बैठी मेरी माता,
सिर कंचन का छत्र घरे ।।४।।
(मैया सन्तन का भण्डार भरे)

वार शनिश्चर कुंकुंम भरणो,
अब लडकन पर हुकम करे ।
खडग, खप्पर, त्रिशुल हाथ में
रक्त बीज को भस्म करें ।
सुमन सुम पछाडे जननी,
महिषासुर को पकड घरे ।।५।।
(मैया सन्तन का भण्डार भरे)

अदीतवार सुनआदि भवानी,
जिन अपने को कष्ट हरे ।
महा कोप होय दानव मारे,
चण्ड- मुण्ड सब चूर करे ।
जब तुम देखो दया रुप होय,
पल में संकट दूर करे ।।६।।
(मैया सन्तन का भण्डार भरे)

सोम स्वभाव धर्यो मेरी माता,
मेरी अर्ज कबूल करे ।
सिंह पीठ पर चढी भवानी,
अटल भवन में राज करे ।
दुनिया आवे दर्शन पावे,
आपरा भक्त तेरो ध्यान धरें ।।७।।
(मैया सन्तन का भण्डार भरे)

सात वार की महिमा वरनू,
थांरी ओ महिमा हद भारी ।
चांद, सूरज दोय तपे शीश पे,
तेरा तेज री बलिहारी ।
ब्रह्मा, वेद भने तेरे द्वारे,
शंकर ध्यान लगाये रहे ।।८।।
(मैया सन्तन का भण्डार भरे)

नउ नौरता बैठी मेरी अम्बा,
दसमी को सम्पूर्ण भये ।
इंद्र, कृष्ण, तेरी करे आरती,
भैरुं चंवर डुलाय रये ।
जय जय जननी आदि भवानी,
अटल छत्र की जय जय जय ।।९।।
(मैया सन्तन का भण्डार भरे)

सन्तन प्रतिपाली सदा कुशाली, जयकारी कल्याण करें।
जयकारी कल्याण करे मैया, नवदुर्गा मेरी सहाय करें।
मैया सन्तन का भन्डार भरें।
श्री बडमाताजी की जय

आरती भेरुजी की

जय भैरव बाबा स्वामी जय भैरव बाबा ।

नमोविश्व भुतेश भुजंगी मंजुल कहलावा ...... ॐ जय ..

उमानंद अमरेश विमोचन जनपद शिर नावा

काशी के कुतवाल आप को सकल जगत ध्यावा ..ॐ जय..

श्वान सवारी बटुकनाथ प्र्भु पीमद हरबाबा ।

रवि के दिन जग भोग लगावत मोदक मन भावा। ..ॐ जय..

भीषम भीम कृपालु त्रिलोचन खप्पर भर खावा

शेख चन्द कृपालु शशि प्र्भु मस्तक चमकावा । ..ॐ जय..

गलमुण्डन की माला सुभोभित सुन्दर दरपावा

नमोनमो आनन्द कन्द प्रभुलटकर मरुजावा । ..ॐ जय..

कर्षतुण्ड शिव कपिल त्रयम्बक यश जग में छाया ।

जो जन तुझसे ध्यान लगावत संकट नहीं आवा । ..ॐ जय..

क्षेत्रपाल (भेरुबाबा) हम शरण तुम्हारी आरति थांरी गांवा ।

लाल बाल से भरझोली सुख सम्पति चाहवां

ॐ जय भेरु बाबा ....

शक्ति माता की आरती

अम्बे तू हे जगदम्बे काली जय दुर्गे खप्पर वाली

तेरे ही गुण गाये भारती हम सब उतारें तेरी आरती

तेरे भक्त जनों पर माता भीड पडी है भारी

दानव दल पर टूट पड़ो मां करके सिंह सवारी ।

सौ सौ सिंहो से है बलशाली अष्ट भुजाओं वाली

दुष्टों को पल में संहारती- हम सब उतारें तेरी आरती

मां बेटे का है इस जग में बडा ही निर्मल नाता

पूत कपूत सुने हें पर ना माता सुनी कुमाता

सबपे करुणा बरसाने वाली अमृत पिलाने वाली ।

दुःखियों के दुखडे निवारणि । हम सब ....

नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना ।

हम तो मांगे मां तेरे मन एक छोटा सा कौना ! हम सब...

सबकी बिगडी बनाने वाली लाज बचाने वाली

सतियों के सत को संवारती । हम सब उतारे तेरी आरती

जय श्री बडमाताजी

आरती

आरती बडमाता तेरी गाये,
तुम बिना कौन सुने वरदाती
किसको जाकर विनय सुनाये, आरती ....
असुरों ने देवी को सताया,
तुमने रुप धरा महामाया
उसी रुप के दर्शन चाहें । आरती ....
रक्तबीज मधु कैटभ मारे
अपने भक्तो के काज संवारे
हम भी तेरे दास कहाये । आरती ....
आरती तेरी करे वरदाती,
हृदय का दीपक नयनों की बाती
निशदिन प्रेम की ज्योती जलाये । आरती ....
लोढा (ध्यान) भक्त मेरा यश गाया ।
जिन ध्याया माता फल पाया
हम भी तेरे शीश झुकाये । आरती ....
आरती तेरी जो कोई गाये ।
सभी सुख सम्पति को पाये ।
चरण कमल रज शीश नमाये । आरती ....

श्री बडमाताजी के अर्चना के नियम

१ अटुट श्रध्दा रखें ।

२ कोई लोढा काला वस्त्र नहीं पहने, धर में काली भैंस या काला बकरा नहीं पाले, काली मटकी भी नहीं रखे । क्योंकि लोढा को काली वस्तुओं का उपयोग वर्जित है।

३ पूजा स्थल पर स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें ।

४ कोई लोढा चकला नहीं खरीदें तथा पुत्री को दहेज में नही दें ।

५ मोसमाः, पुत्र जन्म के १ माह पश्चात जब बहु धर से बाहर आए उस समय पहले श्री कुलदेवी के दर्शन करें, श्री से नमन करें, फिर बाहर जावें ।

६ शिशु का नामकरण समारोह कुलदेवी के समक्ष करें ।

७ एक वर्ष या तीन वर्ष के बालक का मुण्डन संस्कार भी बडवासन देवी के मन्दिर में ही आयोजित करें ।

८ विवाह के पश्चात् (जात) प्रथम दर्शन, नमन करने के लिए श्री कुलदेवी के मन्दिर जाएं ।

९ नवरात्रि में स्त्रिया मेहन्दी नहीं रचाये, प्रातः संध्या समय दीप-धुप करके श्री बडवासन देवी की आरती उतारें ।

१० बड (वटवृक्ष) के पत्ते का निरादर कभी नहीं करें, न जलाएं ।

११ बालक के जन्म पर जच्चा को जो भी दिया जाए, उसे श्री बडवासन देवी को चढाकर फिर दें ।

१२ दशोटन, मासमो, जात, झडूला के समय जैसी श्रध्दा हो वैसे सवा पाव, सवा सेर, सवा पांच सेर बाट व गुड की लापसी चढ़ाऐ ।

१३ मूंडन के समय नमन द्वार की सीढियों से श्री कुलदेवी के गबंभीरे तक प्रत्येक पागोतिया (सीढ़ी) पर एक-एक नारियल (श्रीफल)

चढाएं।

१४ विवाह का प्रथम निमंत्रण पत्र श्री बडवासन देवी के चरणों में प्रस्तुत करें।

१५विवाह या सुप्रसंग अवसर पर जो भी मिष्ठान बने, उसे पहले श्री बडमाताजी को चढाएं ।

१६ नवरात्रि में अगर कोई भी महिला को मासिक धर्म आवे तो प्रति महिला १-१ श्रीफल दंड स्वरुप श्री बडवासन देवी को दशहरे के दिन चढाएं ।

१७ दशहरे के पूजन-हवन में जरुरत के अनुसार सवापाव, सवासेर, सवापांच सेर बाट की गुड की लापसी चढाएं तथा ये चावल, खिचडी खाजा बनाएं। सभी ९-९ हातियां निकाले। धी और खाजा से हवन करें । लापसी प्रसाद और श्रीफल की चिटक (टुकडा) गंदी जगह पर न गिरे, इसका विशेष ध्यान रखें।

१८ नवरात्री में स्त्रियां सिलाई का कार्य नही करें ।

१९ माताजी के दीपक सभी धी के होते हैं। दशहरे के दिन तो अखण्ड दीपक रात भर रहता है। कम से कम नवरात्री में प्रातः संध्या समय प्रत्येक लोढ़ा माताजी को धूप, दीप, पूजा करके आरती करे ।

२० बच्चे के लिए बजने वाले झुनझुने नहीं खरीदें ।

२१ नवरात्री में पुरुष हजामत नहीं बनाये ।

२२ नवरात्री में कोई महिला साबुन से बाल नही धोवें ।

२३ नवरात्री में ब्रह्मचर्य का पालन करें ।

२४ "श्री बडमाता नमः" की एक माला फेरे। जो कोई लोढा अपनी कुलदेवी में अटुट श्रध्दा रखेगा उसकी सभी मनोकामना पूर्ण होगी, रिध्दि-सिध्दि में वृध्दि होगी ।

मुण्डन संस्कार के नियम

१ बालक जब एक या तीन वर्ष का हो जावे तब सुद पक्ष में मुण्डन संस्कार मंदिर में हो सकता है। दो वर्ष के बालक का मुण्डन संस्कार नहीं होता है। आसोज के नवरात्री में मुण्डन संस्कार अति उत्तम है ।

२ सवापाव या सवा किलो गेहूं के बाट की लापसी गुड की बनवाई जाती है। जिसको ९ हांतियां बनाकर माताजी को चढावें ।

३ बालक के ननिहाल से कोजलिया एवं नये वस्त्र टोपी आदि जो आवे उन्हें बालक को मंदिर में बालों का मुण्डन करवा कर, स्नान करा कर पहनावे। बालक के मुण्डित मस्तिष्क पर केसर या कुंमकुंम का स्वास्तिक बनवायें । कोजलिए पर भी ५ स्वास्तिक बनावें और मोली डालकर बालक को वस्त्र पर पहनावें। माता, पिता व बुआ या बहिन आदि भी स्नान कर नये वस्त्र धारण कर पूजा की थाली में केसर, चन्दन, कुंमकुंम, मोली अक्षत, श्रीफल, लापसी प्रसाद आदि के साथ मंदिर में प्रवेश समय प्रत्येक पागोतिये पर एक-एक श्रीफल चढाते चढाते मंदिर में प्रवेश करें ।

४ श्री बडवासन जी का पूजन कर प्रसाद, श्रीफल चढाकर बालक को श्री बड़माताजी के शरणागत करें ।

५ एक-एक श्रीफल देवताओं को व भेरुजी को भी चढावें ।

६ चिटक व प्रसाद आपस में ही बांटे इसका ध्यान रखें ।

७ मुण्डन संस्कार के रु. १०१/-(ज्यादा अपनी श्रध्दानुसार) श्री बडमाताजी के भण्डार में डालें या मैनेजर के पास जमा कर रसीद प्राप्त करें। रसीद प्राप्त करना आवश्यक है। इससे रिकार्ड भी रहता है।

श्री बड़माता के जात देने के नियम

१ जात सुद पक्ष में अच्छे दुगड़िये में ही दी जाती है या विवाह के तुरन्त बाद दी जाती है।

२ जात देने से पूर्व वर-वधु स्नान करके नये वस्त्र धारण करते है। मोड बांधते है, छेडे बांधते है। किसी भी प्रकार का काला वस्त्र या डोर भी अंग पर होना वर्जित है।

३ श्री बडमाताजी की पूजा केसर, कुंमकुंम, पुष्प धुप दीप अक्षत आदि से करें। दो श्रीफल, प्रसाद चढावें।

४ आसका (हवन एवं घूप की राख) अपने साथ ले जा सकते है। जात के रुपये १०१/-ज्यादा से ज्यादा अपनी श्रध्दानुसार) श्री बडमाताजी के भण्डार में डालें या मैनेजर के पास जमा कराकर रसीद प्राप्त करें। रसीद प्राप्त करना आवश्यक है।

यात्रियो को सूचनाएं

१ जोधपुर बीकानेर रेलमार्ग पर मारवाड मूण्डवा स्टेशन से ४ कि.मी. दुर भड़ाणा के कांकण मे श्री बडमाताजी महाराज का मंदिर है ।

२ नागौर अजमेर राज्य मार्ग पर स्थित है।

३ नागौर और अजमेर से जाती ही रहती हैं।

४ श्री माताजी के मंदिर मे एक पैसे से १०/- रुपये तक की भेंट पुजारी के पास जाती है इसके अलावा पुजारी को ईनाम देना यात्री की इच्छा पर है।

५ एक रुपये से लेकर जितना चाहे यात्री अपनी श्रध्दा अनुसार श्री बडमाताजी महाराज के भेंट भण्डार में डाले या जमाकर रसीद प्राप्त करें ।

६ छत्र आदि भेंट करना चाहे तो मैनेजर के पास जमाकर रसीद प्राप्त करें ।

७ चेत्र सुद नवमी और आसोना सुद दसमी को नवरात्री होम होता है । पूर्ण नवरात्री पाठ होता है और वर्ष भर अखण्ड जोत रहती है।

८ प्रतिदिन प्रातः श्री बडमाताजी को दूध का भोग लगता है पुष्प, चन्दन, केसर, कुंमकुंम, मौली से पूजा होती है। प्रातः और संध्या में श्री बडमाताजी की आरती होती है।

९ यात्रीयों की सुविधा हेतु ठहरने के कमरे, गद्दा (बिस्तर) दरियां, बर्तन आदि उपलब्ध हैं।

१० यात्रियो के लिए स्नान, पूजन, भोजन आदि की व्यवस्था है। यात्री लापसी बनवाना चाहे तो मैनेजर से सम्पर्क कर भण्डार से कहकर (रसीद लेकर) बनवा सकते हैं ।

१२ यात्रियों के लिए नियमित भोजन शाला हैं कायम मित्ती रु. २५०१/- हैं। अतः जो बन्धु इसका लाभ लेना चाहें वह रु. २५०१/- जमा कराकर के मैनेजर से रसीद प्राप्त करे।

१३ श्री मन्दिर में कोई वस्तु बर्तन, बिस्तर, फर्नीचर, पलंग कुर्सियां, आदि जो भी भेंट करना चाहें, तो जमा करा कर मैनेजर से रसीद प्राप्त करें।

१४ मुण्डन संस्कंर के रु. १०१/- व जात के रु. १०१/- मैनेजर के पास जमा कराकर रसीद प्राप्त करें।

१५ श्री बडमाताजी के मन्दिर के बाहर श्री भेरुजी का

मालीपन्ना, तेल, नारियल व अगरबत्ती चढाकर पूजा करें।

१६ प्रसाद घर पर लेकर नही जावे, वही सभी को बांट देवे।

१७ जिस किसी भाई-बहनों के मस्से हो गये हो, तो श्री माताजी महाराज की बोलवा करें तथा ठीक (अच्छा) होने पर श्री माताजी महाराज के मन्दिर में कम से १ बुवारी (फूल झाड़ू)चढावें।

१८ शादी व अन्य खुशी के अवसर पर श्री बड़माताजी के मन्दिर में भेंट अवश्य चढ़ावें ।

१९ इनका मन्दिर मे प्रवेश वर्जित है -

१ मासिक धर्म एवं गर्भवती महिलाएं ।

२ मांस-मदिरा व अन्य नशा किये हुए ।

३ काली वस्तु व चमड़ा पहने हुए।

• सहयोगकर्ता •

शुद्धराज लोढ़ा

सुमेरराज लोढ़ा   निर्मला लोढ़ा
अभिषेक लोढ़ा   श्रद्धा लोढ़ा

जोधपुर-अहमदाबाद

Web : www.lodhakuldevi.org
Email : info@lodhakuldevi.org

लोढ़ा मेम्बरशीप का फार्म हमारी वेबसाईट **www.lodhakuldevi.org** एवं मोबाईल एप्लीकेशन **Konnect Me** डाउनलोड करें और डिरेकटरी में फोर्म भरें । जिस व्यक्ति का फोर्म नहि भरा या फार्म में कोई सुधार हो वह हमारी वेबसाईट पर **online** सही कर सकते है ।